

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथनम्

भूमिका

1. राजसूयप्रबन्धः	१-३५
2. दूतवाक्यप्रबन्धः	३६-६०
3. पाञ्चालीस्वयंवरप्रबन्धः	६१-८१
4. नालायनीचरितप्रबन्धः	८२-९०
5. सुन्दोपसुन्दोपाख्यानप्रबन्धः	९१-९४
6. सुभद्राहरणप्रबन्धः	९५-१२५
7. कौन्तेयाकप्रबन्धः	१२६-१२७
8. किरातप्रबन्धः	१२८-१६५
9. कैलासवर्णनप्रबन्ध	१६६-१६७
10. व्यासोत्पत्तिप्रबन्ध	१६८-१७१
11. युधिष्ठिराभिकेकप्रबन्ध	१७२-१७९
12. मत्स्यावतारप्रबन्ध	१८०-१९४
13. वामनावतारप्रबन्ध	१९५-२०४
14. नृगमोक्षप्रबन्ध	२०५-२१६
15. गर्जेन्द्रमोक्षप्रबन्ध	२१७-२२८
16. सन्नानगोपालप्रबन्ध	२२९-२३१

17. कुचेलोपाख्यानप्रबन्ध
18. अजामिलमोक्षप्रबन्ध
19. स्थमन्नकप्रबन्ध
20. शूर्पणखा प्रलापप्रबन्ध
21. राक्षसोत्पत्तिप्रबन्धः
22. दक्षयागप्रबन्ध
23. त्रिपुरदहनप्रबन्ध
24. तारकबधप्रबन्ध
25. अष्टमीमहोत्सवप्रबन्ध
26. स्वाहासुधाकरप्रबन्ध
27. कोटिविरहप्रबन्ध
- श्लोकोनुक्रमणिका

प्रबन्धमञ्जरी

२३२-२३९

२४०-२४७

२४८-२५२

२५३-२५६

२५७-२७०

२७१-२८५

२८६-२८७

२८८-२८८

२८९-३०५

३०६-३१०

३११-३२६

३२७-३६५